International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

भारतीय लोकतंत्र में स्थायित्व और अस्थिरता : क्षेत्रीय दलों की भूमिका का मूल्यांकन

पुष्पेन्द्र सिंह

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, नवल किशोर भारतीय म्युनिसिपल गर्ल्स कॉलिज, चन्दौसी, सम्भल (उ०प्र०)

महात्मा ज्योतिबा फूले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

डॉ० रीता

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, नवल किशोर भारतीय म्युनिसिपल गर्ल्स कॉलिज, चन्दौसी, सम्भल (उ०प्र०)

महात्मा ज्योतिबा फूले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

सार

भारतीय लोकतंत्र विश्व की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक प्रणाली है, जिसकी विशेषता इसकी बहुदलीय संरचना और विविधतापूर्ण सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि है। इस लोकतंत्र में क्षेत्रीय दलों का उदय न केवल राजनीतिक बहुलता का परिचायक है, बल्कि यह क्षेत्रीय आकांक्षाओं, भाषाई अस्मिता और सामाजिक पहचान को भी राजनीतिक मुख्यधारा से जोड़ता है। स्वतंत्रता के प्रारंभिक दशकों में भारतीय राजनीति मुख्यतः राष्ट्रीय दलों, विशेषकर कांग्रेस, के इर्द–गिर्द केंद्रित थी, किंतु 1967 के बाद क्षेत्रीय दलों ने राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। 1989 के बाद गठबंधन युग की शुरुआत ने क्षेत्रीय दलों की भूमिका को निर्णायक बना दिया।

क्षेत्रीय दलों की भूमिका भारतीय लोकतंत्र में दोहरी रही है। एक ओर उन्होंने लोकतंत्र को गहन और समावेशी बनाया, स्थानीय हितों को राष्ट्रीय मंच पर लाने का कार्य किया तथा विकेंद्रीकरण और सामाजिक न्याय को बढ़ावा दिया। दूसरी ओर, इन दलों के उदय ने राजनीतिक अस्थिरता को भी जन्म दिया। बार–बार सरकारों के गिरने, अवसरवादी गठबंधनों, राष्ट्रीय हितों पर क्षेत्रीय स्वार्थ की प्रधानता और नीतिगत असंगतियों ने लोकतांत्रिक स्थायित्व को चुनौती दी है। विशेष रूप से 1990 के दशक में अल्पायु सरकारों और गठबंधन संकटों ने लोकतंत्र की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न खड़ा किया।

आज की राजनीति में क्षेत्रीय दलों की उपस्थिति अपरिहार्य है। वे एक ओर राष्ट्रीय दलों को जवाबदेह बनाते हैं और लोकतांत्रिक विविधता को सुरक्षित रखते हैं, वहीं दूसरी ओर नीति–निर्माण और प्रशासनिक स्थायित्व में बाधाएँ भी उत्पन्न करते हैं। अतः भारतीय लोकतंत्र की मजबूती के लिए आवश्यक है कि क्षेत्रीय और राष्ट्रीय दलों के बीच संतुलन स्थापित किया जाए तथा चुनावी सुधारों के माध्यम से गठबंधन राजनीति को स्थिर और उत्तरदायी बनाया जाए।

मुख्य शब्दः भारतीय लोकतंत्र, क्षेत्रीय दल, स्थायित्व, अस्थिरता, गठबंधन राजनीति, विकेंद्रीकरण, राष्ट्रीय हित, क्षेत्रीय स्वार्थ, राजनीतिक अस्मिता, लोकतांत्रिक विविधता

प्रस्तावना

लोकतंत्र, आमतौर पर ''जनता द्वारा, जनता के लिए'' शासन के रूप में व्याख्यायित होता है, जहाँ जनता शासक (प्रतिनिधि) चुनने, नीति बनाने और शासन प्रक्रिया पर नियंत्रण रखने में सक्रिय भूमिका निभाती है। भारतीय लोकतंत्र इसे और अधिक विशेष बनाता है– यह न केवल विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, बल्कि इसकी संरचना बहुराष्ट्रीय, बहु–भाषी और बहु–सांस्कृतिक परिदृश्य का प्रतिबिंब है। स्वतंत्रता के बाद की दशक–व्यापी चुनौतियाँ– जैसे व्यापक अशिक्षा, गरीबी, सामाजिक मतभेदकृके बावजूद, भारत ने निरंतर लोकतांत्रिक प्रक्रिया को बनाए रखा है। इस संदर्भ में, Suhas Palshikar अपनी पुस्तक Indian Democracy (OUP India, Pune] 2017) में लिखते हैं कि ''भारतीय लोकतंत्र एक कार्या प्रगति (work in progress) है,'' जो समृद्ध लोकतांत्रिक अनुभवों और समकालीन चुनौतियों के बीच संवेदनशील संतुलन स्थापित करता है।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

इतिहास में जैसे–जैसे कांग्रेस का प्रभुत्व घटका, वैसे–वैसे क्षेत्रीय दलों का उदय हुआ। यह सिर्फ राजनीतिक प्रतिस्पर्धा नहीं, बल्कि भाषाई, सांस्कृतिक और सामाजिक पहचानों के राजनीतिककरण का परिणाम था। Drishti IAS की रिपोर्ट बताती है कि क्षेत्रीय दलों का आधार अक्सर ''पहचान, राज्य–स्वायत्तता या विकास'' जैसे मुद्दों पर होता है– उदाहरण के रूप में DMK का दलित पहचान से जुड़ाव या Shiv Sena का मराठी अस्मिता का प्रतिपादन। इस प्रकार, 1960–70 के दशक से राष्ट्रीय एकाधिकार टूटकर बहुदलीय व्यवस्था की ओर बढ़ा और 1989 के बाद गठबंधन राजनीति ने भारतीय लोकतंत्र को विकेन्द्रीकरण की प्रमुख दिशा में प्रवाहित किया।

भारतीय लोकतंत्र में स्थायित्व (stability) और अस्थिरता (instability), ये दो परस्पर विरोधी लेकिन अंतर्संबंधित धाराएँ हैं। स्थायित्व से तात्पर्य लोकतांत्रिक संस्थानों– संविधान, चुनाव आयोग, न्यायपालिका की संरचनात्मक मजबूती से है, जो राजनीतिक संकटों के बावजूद लोकतंत्र के दीर्घकालिक उत्तरजीविता को सुनिश्चित करते हैं। उदाहरण के लिए, South Asia Monitor बताता है कि Emergency (1975–77) जैसी गहरी चुनौती के बावजूद संस्थानों की पुनर्स्थापना ने लोकतंत्र की मज़बूती को प्रदर्शित किया।

वहीं दूसरी ओर, अस्थिरता अक्सर गठबंधन सरकारों की अस्थाई प्रकृति, क्षेत्रीय स्वार्थों की प्रधानता या राष्ट्रीय–क्षेत्रीय प्राथमिकताओं में टकराव से उत्पन्न होती है। Indian Express में प्रकाशित लेख में यह उल्लेख है कि 1967 के बाद कांग्रेस का कई राज्यों में उच्च स्थान खोना– "collaborative instability" की स्थिति को जन्म देता है, जिसने 1970–80 के दशक में राजनीतिक अस्थिरता को बढ़ावा दिया।

अतः इस शोध का प्रासंगिकता और उद्देश्य विवेचित करना आवश्यक है। भारतीय लोकतंत्र, अपने विशाल और विविध परिप्रेक्ष्य के कारण, केवल एक राष्ट्रीय दल की सफलता से ही नहीं, बल्कि क्षेत्रीय दलों के उदय और गठबंधन राजनीति से भी आकार लिया गया है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह पता लगाना है कि कैसे क्षेत्रीय दल लोकतांत्रिक स्थायित्व को सुदृढ़ भी करते हैं (जैसे वंचित समूहों को राजनीतिक रूप से सशक्त करना, स्थानीय मुद्दों को राष्ट्रीय एजेंडा में शामिल करना) और उसी समय वे अस्थिरता के कारक भी बन सकते हैं (जैसे अस्थाई गठबंधन, राष्ट्रीय नीति पर प्रभाव, क्षेत्रीय स्वार्थों के प्राथमिकता स्वीकारना)। इस प्रकार, यह शोध भारतीय लोकतंत्र के विवेचित संतुलन की प्रकृति की समझ को सुदृढ़ करेगा और यह संकेत करेगा कि राज्यों और केंद्र के बीच शक्ति संतुलन कैसे लोकतांत्रिक स्थायित्व को प्रभावित कर सकता है।

भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों का विकास

स्वतंत्रता के बाद भारतीय राजनीति पर कांग्रेस का वर्चस्व था, जिसे 'कांग्रेस सिस्टम' के रूप में जाना जाता है। इस अवधि (1952-64) में कांग्रेस एक ऐसी छत्र–शक्ति के रूप में कार्य कर रही थी जिसने विभिन्न सामाजिक समूहों और मतभेदों को समाहित किया। यह व्यवस्था एक सामाजिक–राजनीतिक वर्चस्व की थी, जिसने लोकतंत्र की नींव डाली, हालांकि यह स्थानीय आकांक्षाओं को पर्याप्त रूप से प्रतिबिंबित नहीं कर सकती थी ।

1967 के आम चुनावों ने इस वर्चस्व को झकझोर दिया। कांग्रेस ने कई राज्यों (उदाहरणतः यूपी, बिहार, तमिलनाडु, बंगाल) में अपनी बहुमत खो दिया, जिससे क्षेत्रीय दलों के लिए मार्ग प्रशस्त हो गया। इस संवैधानिक 'भूकंपीय' घटना ने यह प्रमाणित किया कि कांग्रेस सर्वशक्तिमान नहीं है, बल्कि जनता की असंतुष्टियाँ राजनीतिक स्वरूप में उभर सकती हैं। तमिलनाडु में DMK ने पहली बार 1967 में सत्ता संभाली, जिसने क्षेत्रीय पहचान के आधार पर राजनीतिक बदलाव का सबूत प्रस्तुत किया।

1975–77 की आपातकाल (Emergency) ने कांग्रेस के केंद्रीकरण की चरम सीमा को दर्शाया, लेकिन 1977 के चुनावों में जनता ने इस तर्क को अवमूल्यित करते हुए 'जनता पार्टी' को सात वर्ष के लिए केंद्र में सत्ता सौंप दी। यह गठबंधन अनेक छोटे दलों का संयोजन था, जिसने बहुदलीय प्रणाली को स्थायित्व दिया, हालांकि अंतःविरोध इसकी कमजोरी भी बने।

1980 के दौरान, कांग्रेस ने राज्य स्तर पर अपनी पकड़ बहाल की, लेकिन तब तक क्षेत्रीय दल राज्य स्तरीय राजनीति में मजबूत हो चुके थे। उदाहरण के लिए, 1984 में आंध्र प्रदेश में TDP (Telugu Desam Party) ने कांग्रेस को लोकसभा में मुख्य विपक्षी दल का स्थान दिया, जो क्षेत्रीय दलों की बढ़ती

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

राजनीतिक भूमिका का संकेत था। इसी बिंदु से क्षेत्रीय दलों ने राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पकड़ मजबूत करना आरंभ कर दी।

1989 से गठबंधन राजनीति का युग आरंभ हो गया, जब कांग्रेस की लोकप्रियता और शक्ति में गिरावट आई, राजीव गांधी की मृत्यु, बोफोर्स घोटाला और आर्थिक संकट इसके catalysts बने। इसी बीच, क्षेत्रीय दलों जैसे कि TDP, DMK, AGP ने राष्ट्रीय राजनीति में निर्णायक भूमिका निभानी शुरू की और केंद्र सरकारें गठबंधन पर आधारित होने लगीं।

1990 के दशक ने बहुदलीय प्रणाली को ठोस रूप में स्थापित किया। राजनीतिक विवर्तनता (fragmentation) ने राज्य–विशिष्ट दलों को अधिशक्ति दी, उदाहरणतः BSP और SP (उत्तर प्रदेश में), Biju Janata Dal (ओडिशा), Trinamool Congress (पश्चिम बंगाल), JMM (झारखंड), JD(S) (कर्नाटक) आदि। आर्थिक उदारीकरण (1991 के बाद) ने राज्यों को अधिक नीति–निर्माण स्वायत्तता दी, जिससे क्षेत्रीय दलों को विकास–उन्मुख और पहचान–आधारित एजेंडा संचालित करने का अवसर मिला।

2000 के बाद स्थिति और भी परिपक्व हुई। भाजपा का उभार राष्ट्रीय शक्ति के रूप में हुआ, लेकिन पुनः गठबंधन की राजनीति समाप्त नहीं हुई, कई क्षेत्रों में क्षेत्रीय दल नैरेटिव, वर्चस्व एवं सहायता दोनों के लिए महत्वपूर्ण बने रहे। क्षेत्रीय दलों ने केंद्र–राज्य संबंधों को नए सिरे से परिभाषित किया, नीति निर्माण में हिस्सेदारी माँगी, तथा संघीयवाद को और समावेशी बनाया।

क्षेत्रीय दलों की भूमिका : लोकतांत्रिक स्थायित्व के संदर्भ में

1. विकेन्द्रीकरण और स्थानीय आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति

भारतीय लोकतंत्र में विकेंद्रीकरण ने लोकतांत्रिक स्थायित्व को गहरा और संम्प्रेषित किया है। 1992 में संविधान के 73वें और 74वें संशोधन ने पंचायत राज संस्थाओं और शहरी स्थानीय निकायों को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया, जिससे शक्ति का स्थानीयकरण संभव हुआ, ग्रामीण और शहरी स्थानीय स्वयं शासन की संस्थाएँ बन सकीं, जिनमें टिकाऊ प्रतिनिधित्व और स्थानीय निर्णय लेने की क्षमता थी। इस संरचनात्मक बदलाव से ग्राम सभा, ग्राम पंचायतें, नगर पालिका, ज़िला परिषदें आदि ने सामाजिक न्याय, विकास योजनाओं, सार्वजनिक बजट और योजनाओं के कार्यान्वयन में लोकतांत्रिक सहभागिता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

क्षेत्रीय दलों ने इन्हीं स्थानीय संस्थाओं के माध्यम से क्षेत्रीय हितों, भाषाई, सांस्कृतिक और सामाजिक विविधताओं को राष्ट्रीय राजनीति में आवाज़ दिलाई। जैसे कि क्डज्ञ ने तमिल भाषा और संस्कृति के संरक्षण की मांग करता है, वहीं BSP और SP ने आरक्षण और अन्य पिछड़े वर्गों के लिए राजनीति में सशक्त प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया। इससे लोकतांत्रिक सहभागिता व्यापक हुई और स्थानीय मुद्दों, पहचान और विकास की राजनीति को राष्ट्रीय तक विस्तारित करने में मदद मिली, जिससे लोकतांत्रिक स्थायित्व मजबूत हुआ।

2. गठबंधन सरकारों की मजबूती में योगदान

1989 के बाद गठबंधन राजनीति ने भारतीय लोकतंत्र में क्षेत्रीय दलों की भूमिका को निर्णायक बनाया। राष्ट्रीय दल अब क्षेत्रीय दलों के सहयोग के बिना केंद्र में सरकार बनाने में असमर्थ थे, जिससे गठबंधन सहयोग की संस्कृति को बढ़ावा मिला। क्षेत्रीय दलों जैसे TMC, DMK, BSP, SP आदि ने नीतिगत निर्णयों में विविधता और समावेशिता सुनिश्चित की। उदाहरणतः UPA-II (2009–14) में DMK ने सामाजिक कल्याण और क्षेत्रीय विकास नीतियों के आकार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई; वहीं, TMC ने पुनर्वास और अधिग्रहण कानून (Land Acquisition Rehabilitation and Resettlement Act, 2013) जैसी नीतियों को प्रभावित किया।

इन गठबंधनों में, क्षेत्रीय दल राष्ट्रीय दलों को सत्तास्थिरता प्रदान करते हुए लाभदायक सहयोग भी प्राप्त करते थे, जिससे लोकतांत्रिक स्थायित्व और नीति–निर्माण की विविधता बनी रही। इस प्रकार, क्षेत्रीय दल लोकतांत्रिक स्थायित्व का संवाहक बने, जो व्यापक और समावेशी निर्णय–प्रक्रिया के लिए महत्वपूर्ण था।

3. लोकतांत्रिक सहभागिता का विस्तार

क्षेत्रीय दलों ने लोकतांत्रिक सहभागिता को नए स्तरों तक पहुँचाया, विशेष रूप से ग्रामीण, पिछड़े वर्गों और अल्पसंख्यकों के बीच। जनता की व्यापक भागीदारी बढाने में उन्होंने अमूल्य योगदान दिया,

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

चाहे वह भाषा, जाति, वर्ग या समुदाय आधारित पहचान हो। BSP का दलित नेतृत्व, SP और RJD का OBC नेतृत्व और असम व पूर्वोत्तर में क्षेत्रीय दलों का स्थानीय जनजातीय मुद्दों पर केंद्रित अभियान लोकतांत्रिक विमर्श को और समावेशी बनाते हैं।

इसके साथ ही इन दलों ने राजनीतिक जागरूकता, वोटिंग रुझान और राजनीतिक शिक्षा को भी प्रोत्साहित किया, चुनावी अभियानों, लोकसभा सभाओं, लोकल माध्यमों (जैसे लोक गीत, क्षेत्रीय भाषिका प्रचार) आदि के माध्यम से आम जनता को राजनीतिक प्रक्रिया से जोड़ा। इस तरह, क्षेत्रीय दल लोकतांत्रिक स्थायित्व को सुनिश्चित करने वाले वाहक बने, जो न केवल अधिकारों का ज्ञान देते हैं, बल्कि प्रतिनिधित्व और जिम्मेदारी की भावना भी जगाते थे।

क्षेत्रीय दलों ने भारतीय लोकतंत्र में विकेंद्रीकरण, पहचान आधारित राजनीति और लोकतांत्रिक सहभागिता को मजबूत करने में निर्णायक भूमिका निभाई। उन्होंने न केवल क्षेत्रीय हितों का प्रतिनिधित्व किया, बल्कि राष्ट्रीय राजनीति, गठबंधन सरकारों और नीति निर्माण को समावेशी और संतुलित बनाया। ग्रामीण और पिछड़े वर्गों को राजनीति से जोड़कर, भाषा, जाति और क्षेत्रीय पहचान को लोकतांत्रिक मंच प्रदान करके, ये दल लोकतांत्रिक स्थायित्व की नींव रहे। आगे के अध्यायों में, हम इनके अस्थिरता संबंधी प्रभावों का विश्लेषण भी करेंगे।

क्षेत्रीय दलों की भूमिका : लोकतांत्रिक अस्थिरता के संदर्भ में

1. गठबंधन सरकारों में अस्थिरता

भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों के सहयोग से गठबंधन सरकारों ने लोकतांत्रिक स्थिरता में योगदान दिया है, लेकिन उनका अस्थिरता की ओर झुकाव भी स्पष्ट है। कई बार छोटी बहुमत वाली गठबंधन सरकारों ने लंबी अवधि तक टिककर शासन बनाए रखना कठिन पाया है। उदाहरणतः 1996 में गैर–कांग्रेस/बयानवादियों का गठबंधन या तो गिर गया या केवल कुछ ही महीनों तक चला, जैसे वाजपेयी की सरकार सिर्फ 13 दिन तक अस्तित्व में रही और बाद में प्ज्ञ गुर्जराल की सरकार भी बहुत लंबे समय तक नहीं टिक सकी। इसके अलावा 1977–80 तथा 1996–99 के दौरान लगातार सरकारों का गिरना, गठबन्धन में शामिल क्षेत्रीय दलों के अस्थिर स्वार्थ और क्षणिक प्राथमिकताओं के चक्र को दर्शाता है।

2. क्षेत्रीय स्वार्थ बनाम राष्ट्रीय हित

क्षेत्रीय दल अपनी क्षेत्रीय राजनीति और वोट बैंक को प्राथमिकता देते हुए अक्सर राष्ट्रीय हितों की अनदेखी करते हैं। वे नीतिगत निर्णयों पर केंद्र को टकराव की स्थिति में खड़ा कर देते हैं, जिससे राष्ट्रीय एकजुटता में कमी और अस्थिरता पैदा होती है। ShodhKosh में प्रकाशित लेख बताता है कि क्षेत्रीय दल अक्सर ''populist measures'' अपनाते हैं जो केवल उनके राज्यों में अल्पकालिक लाभ दे सकते हैं; लेकिन इससे राष्ट्रीय नीति और दूरगामी योजना प्रभावित होती है, जिससे लोकतांत्रिक अस्थिरता बढ़ती है। इसी संदर्भ में च्वसपजल च्तवइमत का विश्लेषण बताता है कि विकास के असंतुलन, पहचान आधारित राजनीति और संसाधन असमानता ने क्षेत्रीय दलों को अपनी पाकेटीय प्राथमिकताओं पर केंद्रित बना दिया।

3. नीतिगत असंगति और प्रशासनिक बाधाएँ

केंद्र सरकार के पास राष्ट्रीय नीतियों को एकीकृत रूप में लागू करने की क्षमता होनी आवश्यक है, लेकिन क्षेत्रीय दलों के कारण ये नीतियाँ अक्सर उपचारात्मक एवं टुकड़ों में बदल जाती हैं। जैसा कि ShodhKosh में उल्लेख है, क्षेत्रीय दलों की बढ़ती भागीदारी के कारण राष्ट्रीय नीति निर्माण पथ में असंगतता और अराजकता का खतरा बना रहता है, जो समय की मांग के अनुरूप नहीं होते, जिससे प्रशासनिक बाधाएँ उत्पन्न होती हैं।

इसके अतिरिक्त, विदेश नीति में भी क्षेत्रीय दलों का हस्तक्षेप कुछ मामलों में बाधा बनता आया है। एक अध्ययन में बताया गया है कि तमिलनाडु के DMK और AIADMK जैसे दलों की दक्षिण एशिया बाह्य नीति पर प्रभावशीलता (विशेष रूप से श्रीलंकाई तमिलों के प्रति रुख) के कारण विदेश नीति में असंगति और राष्ट्रीय स्तर पर अस्थिरता उत्पन्न हो सकती है।

4. विकास प्रक्रिया पर प्रभाव

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

क्षेत्रीय दलों द्वारा योजनाओं और कार्यक्रमों का राजनीतिकरण और अस्थायी नीति ढांचे का अभाव भी लोकतांत्रिक स्थिरता में खलल डालता है। Polity Prober की रिपोर्ट अनुसार, पुरानी संस्थाएँ नहीं बन पातीं क्योंकि क्षेत्रीय दल अल्पकालिक लाभ के लिए योजनाओं को चुनावी एजेंडे के रूप में प्रस्तुत कर देते हैं; साथ ही, ऐसे दल भ्रष्टाचार, पारिवारिक राज और पट्टेदारी पर आधारित नीतियों को अपनाते हैं, जिससे विकास प्रक्रिया अस्थिर होती है। इसी के चलते राज्यों की अर्थव्यवस्था अस्थिर बनती है और राष्ट्रीय नीतियों की निरंतरता बाधित होती है।

चुनौतियाँ और संभावनाएँ

भारतीय लोकतंत्र में क्षेत्रीय दलों का योगदान जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही यह लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए कई चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करता है। राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दलों के बीच शक्ति संतुलन, गठबंधन राजनीति की अनिवार्यता, चुनावी सुधारों की आवश्यकता और राष्ट्रीय एकता व क्षेत्रीय आकांक्षाओं का संतुलन, ये सभी पहलू भारतीय राजनीति के भविष्य को गहराई से प्रभावित करते हैं।

1. राष्ट्रीय दल और क्षेत्रीय दलों के बीच शक्ति संतुलन

स्वतंत्रता के बाद लंबे समय तक कांग्रेस पार्टी का एकछत्र शासन रहा, किंतु 1967 के बाद क्षेत्रीय दलों का उदय हुआ और 1989 के बाद गठबंधन युग ने राजनीति की दिशा ही बदल दी। आज स्थिति यह है कि राष्ट्रीय दलों को सत्ता में बने रहने के लिए क्षेत्रीय दलों पर निर्भर रहना पड़ता है। यह शक्ति संतुलन कई बार नीतिगत निर्णयों में बाधा उत्पन्न करता है। उदाहरण के लिए, विदेश नीति और आर्थिक सुधारों जैसे बड़े मुद्दों पर राष्ट्रीय दलों की रणनीति अक्सर क्षेत्रीय दबावों के कारण प्रभावित होती है। इस परिदृश्य में चुनौती यह है कि राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दल एक–दूसरे के सहयोगी बने रहें और केवल तात्कालिक लाभ के बजाय दीर्घकालिक राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता दें।

2. गठबंधन राजनीति की अनिवार्यता और उसका भविष्य

भारत जैसे विशाल और बहुलतावादी देश में गठबंधन राजनीति एक यथार्थ है। कोई भी दल अपने दम पर पूर्ण बहुमत हासिल करना कठिन पा रहा है, विशेषकर 1990 के दशक से। क्षेत्रीय दल गठबंधन की राजनीति में 'किंगमेकर' की भूमिका निभाते हैं। हालांकि इससे लोकतंत्र में प्रतिनिधित्व का विस्तार हुआ है, किंतु अस्थिरता भी बढ़ी है। बार–बार सरकारों का गिरना, नीतिगत असंगतियाँ और प्रशासनिक अस्थिरता इसी का परिणाम हैं। भविष्य में गठबंधन राजनीति को अधिक स्थिर बनाने के लिए स्पष्ट नीति ढांचे, न्यूनतम साझा कार्यक्रम (Common Minimum Programme) और आपसी सहमति के नियमों का पालन आवश्यक होगा।

3. चुनावी सुधारों की आवश्यकता

भारतीय राजनीति की वर्तमान चुनौतियों में सबसे अहम है चुनावी सुधार। क्षेत्रीय दल कई बार जातिवाद, सांप्रदायिकता और धनबल के आधार पर चुनाव जीतते हैं, जिससे लोकतांत्रिक मूल्यों को क्षति पहुँचती है। इसके अतिरिक्त, दलबदल (defection) और छोटी–छोटी पार्टियों के असंतुलित प्रभाव से भी राजनीतिक अस्थिरता पैदा होती है। चुनाव आयोग द्वारा सख्त निगरानी, राजनीतिक दलों के लिए आंतरिक लोकतंत्र, चुनावी खर्च की सीमा का कड़ाई से पालन और पारदर्शिता को बढ़ावा देना आवश्यक है। भविष्य में चुनावी सुधार न केवल लोकतंत्र को मजबूत करेंगे बल्कि राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दलों के बीच सहयोग की नई राहें भी खोलेंगे।

4. राष्ट्रीय एकता और क्षेत्रीय आकांक्षाओं का संतुलन

भारत की सबसे बड़ी ताकत इसकी विविधता है। भाषाई, सांस्कृतिक, धार्मिक और क्षेत्रीय विविधताएँ लोकतंत्र को जीवंत बनाती हैं। किंतु जब क्षेत्रीय आकांक्षाएँ राष्ट्रीय हितों से टकराती हैं तो गंभीर चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं। कई बार क्षेत्रीय दल केवल अपने राज्य या समुदाय के हितों को प्राथमिकता देते हैं और राष्ट्रीय मुद्दों को पीछे छोड़ देते हैं। इससे राष्ट्रीय एकता प्रभावित होती है। भविष्य में आवश्यकता इस बात की है कि राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दल मिलकर ऐसी नीतियाँ बनाएँ, जिनमें क्षेत्रीय हितों को मान्यता मिले, परंतु राष्ट्रीय एकता भी बनी रहे। सहकारी संघवाद (Cooperative Federalism) इस दिशा में एक प्रभावी उपाय हो सकता है।

भारतीय लोकतंत्र का भविष्य काफी हद तक इस बात पर निर्भर करता है कि राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दलों के बीच संतुलन किस प्रकार कायम होता है। चुनौतियाँ अनेक हैंकृजैसे गठबंधन सरकारों की

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

अस्थिरता, चुनावी प्रक्रिया की खामियाँ और क्षेत्रीय स्वार्थों का बढ़ता प्रभावकृलेकिन संभावनाएँ भी उतनी ही हैं। यदि चुनावी सुधार लागू किए जाएँ, गठबंधन राजनीति को संस्थागत रूप दिया जाए और राष्ट्रीय व क्षेत्रीय आकांक्षाओं में संतुलन स्थापित हो, तो भारत का लोकतंत्र न केवल स्थिर रहेगा बल्कि और अधिक समावेशी व सशक्त बनेगा।

निष्कर्ष

भारतीय लोकतंत्र एक अद्वितीय प्रयोग है, जहाँ विविधता और बहुलता को राजनीतिक व्यवस्था की आधारशिला माना जाता है। इस व्यवस्था में क्षेत्रीय दलों की भूमिका विशेष महत्व रखती है। स्वतंत्रता के बाद प्रारंभिक वर्षों में भारतीय राजनीति पर कांग्रेस पार्टी का वर्चस्व रहा, किंतु समय के साथ क्षेत्रीय आकांक्षाओं और पहचान–आधारित आंदोलनों के चलते क्षेत्रीय दलों का उभार हुआ। आज की स्थिति यह है कि बिना क्षेत्रीय दलों के सहयोग के किसी भी राष्ट्रीय दल के लिए सत्ता तक पहुँचना लगभग असंभव है। इस प्रकार, भारतीय लोकतंत्र में क्षेत्रीय दलों की उपस्थिति अपरिहार्य है।

क्षेत्रीय दलों की विशेषता यह है कि वे स्थानीय मुद्दों, भाषाई–सांस्कृतिक पहचान और क्षेत्रीय हितों को राष्ट्रीय मंच तक पहुँचाने का कार्य करते हैं। इस दृष्टि से वे लोकतंत्र को अधिक समावेशी और प्रतिनिधिक बनाते हैं। उनकी सक्रियता ने उन वर्गों को भी राजनीति में शामिल किया है जिन्हें पहले राष्ट्रीय दल नज़रअंदाज़ करते रहे थे। जातीय समूहों, ग्रामीण समाज और पिछड़े वर्गों की राजनीति में भागीदारी को बढ़ावा देने में क्षेत्रीय दलों ने अहम योगदान दिया है। यह लोकतंत्र की गहराई और स्थायित्व दोनों की ओर संकेत करता है।

क्षेत्रीय दल केवल स्थायित्व का कारक नहीं हैं, वे अस्थिरता के स्रोत भी बनते हैं। गठबंधन सरकारों में बार–बार समर्थन वापस लेना, अल्पकालिक राजनीतिक लाभ के लिए राष्ट्रीय नीतियों पर दबाव डालना और विकास योजनाओं को राजनीतिक रंग देना लोकतंत्र के सामने गंभीर चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है। इस प्रकार क्षेत्रीय दल भारतीय राजनीति में एक दोहरी भूमिका निभाते हैं, एक ओर वे लोकतंत्र को व्यापक और सशक्त बनाते हैं, वहीं दूसरी ओर वे उसकी स्थिरता को कमजोर भी करते हैं।

इस संदर्भ में भारतीय राजनीति में सह–अस्तित्व और सहयोग की संस्कृति का महत्व और भी बढ़ जाता है। राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दलों के बीच टकराव के बजाय सहकारिता की भावना आवश्यक है। यदि क्षेत्रीय दल केवल संकीर्ण स्वार्थ तक सीमित न रहकर राष्ट्रीय दृष्टिकोण अपनाएँ और राष्ट्रीय दल क्षेत्रीय आकांक्षाओं को सम्मान दें, तो लोकतंत्र न केवल अधिक स्थिर होगा बल्कि उसकी जड़ों में गहराई भी आएगी।

अंततः, क्षेत्रीय दलों का योगदान भारतीय लोकतंत्र को अधिक समावेशी, उत्तरदायी और संतुलित बनाने में नकारा नहीं जा सकता। चुनौतियाँ अवश्य हैं, किंतु संभावनाएँ भी उतनी ही व्यापक हैं। भारतीय राजनीति का भविष्य इसी बात पर निर्भर करेगा कि क्षेत्रीय और राष्ट्रीय दल कितनी परिपक्वता से सहयोग का रास्ता अपनाते हैं। यदि संतुलन और सह–अस्तित्व की यह संस्कृति निरंतर विकसित होती है, तो भारतीय लोकतंत्र विश्व में एक आदर्श उदाहरण के रूप में अपनी पहचान और भी मजबूत करेगा।

सन्दर्भ

1. पलशिकर, सुहास, (2017), इंडियन डेमोक्रेसी, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पुणे, पृ० 45,
2. दृष्टि I.S. (2022), राइज ऑफ रीजनल पार्टीज इन इंडिया, दृष्टि द विज़न फाउंडेशन, नई दिल्ली, पृ० 18, उपलब्ध– https://www.drishtiias.com/Paper2/rise-of-regional-parties-in-india
3. साउथ एशिया मॉनिटर, (2019), डाइवर्सिटी एंड डेमोक्रेसी : व्हाई इंडिया रिमेंस पॉलिटिकली स्टेबल इन वॉलेटाइल साउथ एशिया, नई दिल्ली, पृ० 67, उपलब्ध– https://www.southasiamonitor.org/index.php/spotlight/diversity-and-democracy-why-india-remains-politically-stable-volatile-south-asian
4. द इंडियन एक्सप्रेस, (2018, 15 अगस्त), अ ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ डेमोक्रेसी एंड पॉलिटिकल स्टेबिलिटी इन इंडिया, इंडियन एक्सप्रेस ग्रुप, नई दिल्ली, उपलब्ध– https://indianexpress.com/article/opinion/columns/a-brief-history-of-democracy-independence-day-political-stability-5307035/

5. दिवाकर, आर० (2017), पार्टी सिस्टम इन इंडिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृ० 45
6. पलशिकर, सुहास – यादव, योगेंद्र, (2011), पार्टी कम्पटीशन इन इंडियन स्टेट्स : इलेक्ट्रोरल पॉलिटिक्स इन पोस्ट–कांग्रेस पोलिटी, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृ० 22–27
7. ब्रास, पी० आर, (1990), द पॉलिटिक्स ऑफ इंडिया सपदबम इंडिपेंडेंस, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज, पृ० 101–110
8. दृष्टि I.S. (2022), राइज ऑफ रीजनल पार्टीज इन इंडिया, दृष्टि द विज़न फाउंडेशन, नई दिल्ली, पृ० 18, https://www.drishtiias.com/Paper2/rise-of-regional-parties-in-india
9. द इंडियन एक्सप्रेस, (2018, 15 अगस्त), अ ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ डेमोक्रेसी एंड पॉलिटिकल स्टेबिलिटी इन इंडिया, इंडियन एक्सप्रेस ग्रुप, नई दिल्ली, https://indianexpress.com/article/opinion/columns/a-brief-history-of-democracy-independence-day-political-stability-5307035/
10. साउथ एशिया मॉनिटर, (2019), डाइवर्सिटी एंड डेमोक्रेसी : व्हाई इंडिया रिमेंस पॉलिटिकली स्टेबल इन वॉलेटाइल साउथ एशिया, नई दिल्ली, पृ० 67, https://www.southasiamonitor.org/spotlight/diversity-and-democracy-why-india-remains-politically-stable-volatile-south-asian
11. डेक्कन क्रॉनिकल, (2024), राइज ऑफ रीजनल पार्टीज ऑफ इंडिया, हैदराबाद, उपलब्ध– https://www.deccanchronicle.com/nation/rise-of-regional-parties-of-india-898718
12. इंसाइट्सऑनइंडिया, (2023), इवोल्यूशन ऑफ पॉलिटिकल पार्टीज इन इंडिया सपदबम इंडिपेंडेंस, नई दिल्ली, उपलब्ध– https://www.insightsonindia.com/governance/political-parties-in-india/evolution-of-political-parties-in-india-since-independence/
13- बैनोट्स.ओआरजी, (2023), इवोल्यूशन ऑफ स्टेट एंड मल्टी–पार्टी सिस्टम इन इंडिया, उपलब्ध– https://banotes.org/state-politics-in-india/evolution-multi-party-systems-indian-states-1990s/
14. यादव, योगेंद्र, (1999), इलेक्टोरल पॉलिटिक्स इन द टाइम ऑफ चेंज : इंडिया'स थर्ड इलेक्ट्रोरल सिस्टम, 1989–99, इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकल, 34(34–35), 2393–2399
15. हसन, ज़ोया, (2002), पार्टीज एंड पार्टी पोलिटिक्स इन इंडिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली,
16. जाफरेलोट, क्रिस्टियन, (2003), इंडिया'स साइलेंट रिवोल्यूशन : द राइज ऑफ द लोअर कास्ट्स इन नॉर्थ इंडिया, हर्स्ट–कंपनी, लंदन
17. छिब्बर, प्रदीप–नूरुद्दीन, इरफ़ान, (2004), डू पार्टी सिस्टम्स काउंट? द नंबर ऑफ पार्टीज एंड गवर्नमेंट परफॉर्मेंस इन द इंडियन स्टेट्स, कम्पेरेटिव पॉलिटिकल स्टडीज, 37(2), 152–187
18. मैनोर, जेम्स, (1997), रीजनल पार्टीज इन फेडरल सिस्टम्स, जर्नल ऑफ कॉमनवेल्थ एंड कम्पेरेटिव पॉलिटिक्स, 35(3), 103–120,
19. कोहली, अंजुम, (1990), डेमोक्रेसी एंड डिसकंटेंट : इंडिया'स ग्रोइंग क्राइसिस ऑफ गवर्नेबिलिटी, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज
20. कुमार, संजय, (2007), इलेक्शंस इन इंडिया : द इमर्जेंस ऑफ रीजनलिज़्म, पी० वालेस एण्ड आर० चोपड़ा (संपादक), इंडियन पॉलिटिक्स एंड सोसाइटी टुडे, पियरसन लॉन्गमैन, नई दिल्ली,
21. श्रीधरन, ई, (2003), कोलिशन पॉलिटिक्स इन इंडिया : लेसन्स फ्रॉम थ्योरी, कम्पेरिजन एंड रीसेंट हिस्ट्री, ISS वर्किंग पेपर, यूनिवर्सिटी ऑफ पेंसिल्वेनिया,
22. सिंह, एम०पी० – सक्सेना, आर० (2003), इंडियन पॉलिटिक्स : कंटेम्पररी इश्यूज एंड कॉन्सर्न्स, प्रेंटिस हॉल, नई दिल्ली
23. पाई, एस० (2002), दलित एसरशन एंड द अनफिनिश्ड डेमोक्रेटिक रिवोल्यूशन : द BSP इन उत्तर प्रदेश, सेज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली

24. ब्रास, पॉल आर०, (1994), द पोलिटिक्स ऑफ इंडिया सपदबम इंडिपेंडेंस, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज, पृ० 210
25. हसन, ज़ोया, (2000), पॉलिटिक्स एंड द स्टेट इन इंडिया, सेज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ० 145
26. चंद्र, बिपन, एट अल, (2008), इंडिया सपदबम इंडिपेंडेंस, पेंगुइन बुक्स, नई दिल्ली, पृ० 312
27. मैनोर, जेम्स, (1998), रीजनलिज्म इन इंडियन पॉलिटिक्स, ओरिएंट लॉन्गमैन, हैदराबाद, पृ० 167
28. कुमार, संजय, (2018), पोस्ट–मंडल पॉलिटिक्स इन बिहार : चेंजिंग इलेक्ट्रोरल पैटर्न्स, सेज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ० 94
29. यादव, योगेंद्र, (1996), रिकॉन्फ़िगरेशन इन इंडियन पॉलिटिक्स : स्टेट असेंबली एलेक्शंस, 1993–1995, इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकल, 31(2), 95–104
30. पलशिकर, सुहास – यादव, योगेंद्र, (2002), फ्रॉम हेजेमनी टू कन्वर्जेंस : पार्टी सिस्टम एंड इलेक्ट्रोरल पॉलिटिक्स इन द इंडियन स्टेट्स, 1952–2002, जर्नल ऑफ इंडियन स्कूल ऑफ पॉलिटिकल इकोनॉमी, 14(1–2), 5–44
31. श्रीधरन, ई, (2004), कोलिशन पॉलिटिक्स इन इंडिया : लेसन्स फ्रॉम थ्योरी, कम्पेरिजन एंड रीसेंट हिस्ट्री, इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, 65(3), 345–370
32. मेहरा, अजय के, (2005), फ्रैग्मेंटेशन ऑफ द इंडियन पार्टी सिस्टम एंड रीजनल पार्टीज, द इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, 66(4), 755–772
33. छिब्बर, प्रदीप के० – नूरुद्दीन, इरफ़ान, (2004), डू पार्टी सिस्टम्स काउंट? द नंबर ऑफ पार्टीज एंड गवर्नमेंट परफॉर्मेंस इन द इंडियन स्टेट्स, कम्पेरेटिव पॉलिटिकल स्टडीज, 37(2), 152–187
34. शोधकोष, (2021), रीजनल पार्टीज एंड कोलिशन पॉलिटिक्स इन इंडिया, ऑनलाइन उपलब्ध
35. पोलिटी प्रोबर, (2023), रीजनल पार्टीज इन इंडिया : कॉज़ेस, रोल एंड इम्पैक्ट, ऑनलाइन उपलब्ध
36. इंडिया टुडे आर्काइव्स, (1997), द कोलैप्स ऑफ़ यूनाइटेड फ्रंट गवर्नमेंट, ऑनलाइन उपलब्ध
37. (ऑब्ज़र्वर रिसर्च फाउंडेशन), (2019), रीजनल पार्टीज एंड इंडिया'स फॉरेन पॉलिसी